ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 81-82

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

शैव सम्प्रदाय– एक ऐतिहासिक परिचय

ऋषिकेश

शोध अध्येता– इतिहास विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी शोध केन्द्र–बुन्देलखण्ड महाविद्यालय–झाँसी (उ0प्र0) भारत

Received- 16.10.2019, Revised- 20.10.2019, Accepted - 23.10.2019 E-mail: rishikesh84@gmail.com

सारांश : *विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति की गणना की जा सकती है। साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के अध्ययन करने पर यह विदित होता है, कि इसमें अनेक सम्प्रदायों का उदय समय–समय पर हुआ हैं। जिसमें प्रमुखतः वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन, आजीवक, नित्यवादी, भौतिकवादी, भाग्यवादी आदि सम्प्रदायों का उद्भव एवं एक दूसरे में समाहित होना, भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। इन सभी सम्प्रदायों में एक शैव सम्प्रदाय भी महत्वपूर्ण था, जिसकों मानने वाले आज विश्व के अनेक देशों में पाये जाते हैं।*

कुंजी शब्द – प्राचीनतम संस्कृति, भारतीय संस्कृति, साहित्यिक, पुरातात्विक, सम्प्रदाय, आजीवक, नित्यवादी।

भारतीय इतिहास में भागवान शिव तथा उनके अवतारों को मानने वालों को शैव कहते हैं। शैव सम्प्रदाय में शाक्त, नाथ, दसनामी, नाग आदि उपसम्प्रदाय पाये जाते हैं। शैव धर्म का प्रारम्भ कब हुआ ? यद्यपि यह निश्चित रूप से कहना अत्यन्त कठिन है, परन्तु इतना सुनिश्चित है, कि अन्य सम्प्रदायों की भांति इनका भी क्रमिक विकास हुआ होगा। इस सम्प्रदाय का प्राचीनतम उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी में देखने को मिलता है। ऐसी दशा में ऐतिहासिक दृष्टि से भारत में शैव धर्म प्राचीनतम सम्प्रदाय के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

0

सिन्धुघाटी की सभ्यता से प्राप्त होती है। सिन्धुघाटी की सभ्यता में शिव की कल्पना मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों में की गयी थी। वहाँ से प्राप्त कई मुद्राओं पर पशुओं के बीच योगी, पशुपति, शिव (रूद्र) को दर्शाया गया था। सिन्धु सभ्यता के लोग लिंग और योनि की पूजा करते थे। इसका संकेत वहाँ से प्राप्त मानुषलिंग और योनि के आकार के प्रस्तरों द्वारा प्राप्त होता है। पशुपति तथा योगीश्वर शिव का मूर्त रूप तथा लिंग उनका अमूर्त रूप माना जाता है। अतः भारत में लिंग उपासना प्रागैतिहासिक काल से प्रचलित कही जा सकती है ।

वैदिककालीन ग्रन्थों में मुख्यतः ऋग्वेद में शिव का प्रारम्भिक नाम 'रूद्र' आकाश में चमकने वाली बिजली एवं वर्षा के देवता माने गये है। रूद्र को ही आगे चलकर शिव, शंकर, भोले नाथ, नीलकंठ, महादेव आदि नामों से सम्बोधित किया गया। रूद्र का अर्थ होता है भयानक। यह संहार के देवता हैं। उनके समस्त विश्लेषण इस ओर संकेत करते है कि वे 'जटाधारी' तथा 'धुनषधारी' कहे गये है, जो मनुष्य एवं अन्य पशुओं के संहार में समर्थ है।

उत्तर वैदिक कालीन ग्रन्थ अथर्ववेद में उनका संहारक रूप का अधिक महत्व है। पशुओं की सुरक्षा हेतु की गई प्रार्थना तथा अथर्ववेद में 'श्वानों' से बतलाये गये उनके सम्बन्ध तथा व्याधियों, पिशाचों एवं भूतों से रक्षा हेतु रूद्र की प्रार्थना का उल्लेख से अग्नि व इन्द्र की तुलना में रूद्र की लोकप्रियता अधिक प्रचलित दिखाई देती है। लिंग पूजा की ओर आर्यो की रूचि का विकास होता गया। शिव के प्रतीक रूप में लिंग की पूजा व्यापक होने लगी। ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, सूत्रग्रन्थों, रामायण, महाभारत इत्यादि प्राचीन साहित्य में रूद्रशिव की महिमा दर्शाती अनेक कथाएँ दी गई और उनके अवतार व्यक्ति को सुख, समृद्धि, भोग, मोक्ष प्रदान करने वाले एवं व्यक्ति की रक्षा करने वाला बताया गया है। श्वेताश्वर उपनिषद में इन्हें 'महादेव' कहा गया है। रामायण में 'शिव पार्वती' विवाह, काम दहन, कार्तिकेय जन्म, गंगावतरण तथा सागर मंथन प्रंसग में शिव द्वारा विषपान आदि अनेक प्रसंगों का उल्लेख प्राप्त होता है।

पतंजलि (ई0पू0 दूसरी सदी) के महाभाष्य से ज्ञात होता है, कि शिव के उपासक 'शिव–भावत' कहे जाते थे। ये शिव की आराधना मूर्ति पूजा के रूप में करते थे। भारत में मौर्यकाल के पश्चात जो विदेशी आक्रमणकारी (यवन, शक, पह्लव, कुषाण) आये, तो उनका आकर्षण शैव सम्प्रदाय के प्रति ज्यादा था। उन्होनें 'माहेश्वर' शैव धर्म को अपनाया, इसका प्रमाण उनके समकालीन ग्रन्थों और मुद्राओं में मिलता है। इन राजाओं के सिक्कों पर शिव, त्रिशूल, और नन्दी की आकृतियाँ अंकित है।

ईसवी सन् की तीसरी शताब्दी में धीरे धीरे शैव सम्प्रदाय दक्षिण भारत के कन्याकुमारी तक प्रसारित हो गया। मदुरा के तमिल संगम (संघ) के साहित्य में भी शिव की महिमा का गान हुआ है। इसी प्रकार गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल में भागवत सम्प्रदाय की भाँति शैव सम्प्रदाय का भी प्रसार–प्रचार सम्पूर्ण भारत में व्यापक रूप से हुआ। इस काल में तथा मध्यकाल में सम्पूर्ण भारत के अधिकांश राज्यों

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

द्वारा निर्मित शिवालयों को देखकर इस सम्प्रदाय की व्यापक लोकप्रियता की प्रतीत स्पष्ट होती है। गुप्त कालीन शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का सेनापति वीर सेन शैव धर्म का अनुयायी था । मथुरा स्तम्भ लेख से विदित होता है, कि उसने शैवों के निवास हेतु उदयगिरि की पहाड़ी पर एक गुफा का निर्माण कराया था। 'उपमितेश्वर' और 'कपिलेश्वर' नामक शैव आचार्यो के सम्मान में शिव लिंगों की स्थापना की गई थी। सम्भवतः गुप्त काल से ही शिव लिंग उपासना का प्रचार–प्रसार समाज में विशेष रूप से प्रचलित हुआ।

वर्तमान समय के परिपेक्ष्य में शैव सम्प्रदाय हिन्दू सनातन धर्म का एक अभिन्न अंग है इसमें शिव, अनादि, अनन्त एवं स्वयंभू के रूप में स्थापित है। यह सार्वभौमिक एवं सार्वकालि सत्ता की प्रबल इच्छा इसलिये भी उचित है, क्योंकि वह किसी जाति–विशेष, देश विशेष, काल विशेष अथवा स्थान विशेष से नही बाँधे जा सकते है। श्वेताश्वर उपनिषेद में वर्णित है कि सृष्टि के आदिकाल में जब अन्धकार ही अन्धकार था, न दिन था, न रात्रि, न सत् था, न असत्, तब केवल एक निर्विकार शिव (रूद्र) ही थे। ऐसे निर्विकारी शिव की उपासना से सम्पूर्ण ब्राह्मण साहित्य भरा पड़ा है। आज लगभग सम्पूर्ण भारत में शिवलिंग एवं शिव उपासना विद्यमान है। भगवान शिव के लिए वर्ष में तमाम पर्व मनाये जाते हैं, जैसे श्रावण मास में शिव के जलाभिषेक हेतु हर– हर, बम बम के शब्दों का गूंज तथा शिवरात्रि में शिव की विशेष पूजा–अर्चना होती है। लगभग सभी धर्म एवं सम्प्रदाय के लोग शिव को किसी न किसी रूप में अपना ईष्ट मानते हैं। शिव सभी देवों में समन्वित हैं और सभी देव शिव में समाहित हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सच्चिदानन्द त्रिपाठी – शुंगकालीन भारत
2. जय शंकर मिश्र – प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास
3. प्रवीणचन्द्र परीख – भारत दर्शन आदि युग
4. बलदेव उपाध्याय – आर्य संस्कृति के मूलाधार
5. द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल – प्रतिमान विज्ञान
6. राजबली पाण्डेय – प्राचीन भारत
7. शिव पुराण – गीता प्रेस, गोरखपुर

*****